फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 73 संख्याः 253 प्रभात जयपुर, रविवार 16 अप्रेल , 2023 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.50 रु.

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

# राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

ARBiT

Blighty Vilayat & Important Letter of No Consequence

In an attempt to plumb the sea's depth a 'Firanghie' king had a rope dropped into it, millions of yards disappeared.

Typing, Mouse Clicking Show Your Work Stress

One in three employees suffers from workplace stress

*पर्यावरणविद पारम्परिक तौर पर मानते आए हैं कि ''एन्डेन्जर्ड'' टाइगर्स नेपाल के दक्षिणी मैदानी भागों के सर्वोच्च परभक्षी हैं। इसी तरह ''वल्नरेबल'' लैपर्ड (तेंदुआ) पहाड़ी भागों पर राज करते हैं और ''वल्नरेबल'' स्नोलैपर्ड सुदूर उत्तर के पहाड़ी भागों के शहंशाह हैं। लम्बे अर्से से इस देश के स्कूलों में भी यही पढ़ाया जाता रहा है। पर विभिन्न अध्ययनों से पता चला है कि, जलवायु परिवर्तन टाइगर व लैपर्ड को निरंतर अनुकूल हैबिटैट की तलाश में उत्तर की तरफ धकेल रहा है तथा वो स्नोलैपर्ड की टैरिटरी में घुस रहे हैं। तीनों प्रजातियों की रेंज में पहले से ही ''ओवर लैप'' है, विशेष रुप से ऊँचाई वाले क्षेत्र में। कैमरा ट्रैप में पूर्वी नेपाल में 3000 मीटर की ऊंचाई पर टाइगर की तस्वीरें मिली हैं, जो कि स्नोलैपर्ड का क्षेत्र है। भारत और भूटान में तो टाइगर और लैपर्ड और भी ज्यादा ऊंचाई, क्रमशः 3600 और 4000 मीटर, पर देखे गए हैं, इतना ही नहीं, 5400 मीटर की ऊँचाई पर लैपर्ड की तस्वीरें ली गई हैं। माना जाता है कि, स्नोलैपर्ड 3000 से 5000 मीटर की ऊंचाई पर रहते हैं। जहां तक कुछ कम ऊँचाई पर रहने वाली बिग कैट्स, टाइगर और लैपर्ड की बात है, टाइगर, लैपर्ड को उनके क्षेत्र के बाहरी किनारे तक धकेल देने के लिए जाने जाते हैं, तथा दोनों का भोजन भी समान है। लेकिन टाइगर स्नोलैपर्ड के साथ कैसे पेश आते हैं इस बारे में ज्यादा जानकारी नहीं हैं। पर्यावरणविद् बिक्रम श्रेष्ठा कहते हैं कि, टाइगर की तुलना में स्नोलैपर्ड कमजोर होते हैं और अगर दोनों का आवास समान हुआ तो टाइगर स्नोलैपर्ड को बेदखल कर सकते हैं। श्रेष्ठा कहते हैं कि, लैपर्ड व स्नोलैपर्ड के मामले में भी यही स्थिति होगी और लैपर्ड लाभ में रहेंगे। संरक्षणविद्, केदार बराल का कहना है कि, ''गर्म होते विश्व में टाइगर व लैपर्ड का स्नोलैपर्ड से टकराव बढ़ सकता है। हमारे शोध बताते हैं कि सामान्य लैपर्ड उत्तर में ऊंचाई वाले क्षेत्रों की ओर बढ़ रहे हो सकते हैं, क्योंकि, ऊँचाई वाले क्षेत्र, जो पहले इनके लिए उपयुक्त नहीं थे, अब गर्मी बढ़ने के कारण इन्हें रास आएंगे। श्रेष्ठा की रिसर्च बताती है कि, स्नोलैपर्ड भी और ऊंचे क्षेत्रों की ओर जा रहे है, क्योंकि, उनकी मौजूदा रेंज में तापमान बढ़ रहा है।*

# भ्रष्टाचार के मुद्दे पर अमित शाह ने गहलोत व कांग्रेस हाई कमान पर तीखा कटाक्ष किया

## शाह के अनुसार पायलट को ज्यादा अंक मिल सकते हैं, जमीनी स्तर पर अच्छा काम करने के लिये, पर गहलोत को उनसे ज्यादा मार्क्स मिल रहे हैं, हाई कमान की तिजोरी में अधिक पैसा डालने की वजह से

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 15 अप्रैल। केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने भ्रष्टाचार के मुद्दे पर राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत तथा कांग्रेस नेतृत्व पर कटाक्ष किया है। राजस्थान में एक जनसभा को संबोधित करते हुये, अमित शाह ने कहा कि वे सचिन पायलट को यह बता देना चाहते हैं कि उनका मुख्यमंत्री बनने का नम्बर कभी नहीं आयेगा क्योंकि राजस्थान में अगली सरकार भाजपा बनायेगी।

- **अमित शाह ने कांग्रेस हाई कमान पर भी तंज कसते हुए कहा, यह दुख की बात है, कांग्रेस हाई कमान ने उस व्यक्ति को मु.मंत्री बनाया, जो ज्यादा पैसा देता है, बनिस्पत उस व्यक्ति के जिसने धरातल पर ज्यादा काम किया है।**
- **अमित शाह के कथन का भावार्थ है कि, ''कांग्रेस में पैसा बोलता है।''**
- **कांग्रेस व भाजपा के संबंध भी अचानक काफी जटिल हो गये हैं।**
- **भाजपा हाई कमान वसुंधरा राजे को पसंद नहीं करता और दूसरी ओर कांग्रेस हाई कमान भी गहलोत से नाखुश है, पर दोनों हाई कमान उन व्यक्तियों के खिलाफ कार्यवाही नहीं कर पा रहे, जिन्हें वे पसंद नहीं करते।**
- **साथ ही वसुंधरा राजे व गहलोत के संबंध काफी नजदीकी के हैं, और संकट के समय एक दूसरे की खूब मदद करते हैं, अमित शाह ने गहलोत-वसुंधरा राजे के अजीबोगरीब संबंधों पर अपनी टिप्पणी से अप्रत्यक्ष प्रहार भी किया है।**

उन्होंने कहा कि जमीनी स्तर पर काम करने के मामले में सचिन पायलट के ज्यादा नम्बर हो सकते हैं, लेकिन कांग्रेस के कोष में ज्यादा पैसा पहुँचाने के मामले में ज्यादा नम्बर अशोक गहलोत के हैं।

अपने इस बयान के जरिये, अमित शाह ने गहलोत पर निशाना साधते हुये, उन्हें गांधी परिवार का ''मनी बैग'' बताया है तथा गांधी परिवार पर निशाना साधते हुये कहा है कि यह परिवार एक ऐसे व्यक्ति को मुख्यमंत्री के रूप में पसद करता है, जो नेतृत्व को पैसा देता है, ऐसे व्यक्ति को नहीं, जिसने जमीनी स्तर पर ज्यादा काम किया है। दूसरे शब्दों में, अमित शाह कह रहे हैं कि ''पैसा बोलता है कांग्रेस पार्टी में,'' और यह एक निष्पक्ष आंकलन है क्योंकि गांधी परिवार गहलोत को हटाने में असमर्थ रहा है क्योंकि वे पार्टी कोष में पैसा पहुँचाते हैं।

सचिन पायलट ने अनशन पर बैठकर वसुंधरा के भ्रष्टाचार को निशाना बनाया था, लेकिन अमित शाह के अनुसार, लेकिन यह काम भी अच्छा हनीं माना गया तथा इसको लेकर, सचिन पालयट की खिंचाई की जा रही है।

क्या अमित शाह, सचिन पायलट को ईमानदार तथा अशोक गहलोत को भ्रष्ट बता रहे हैं?

गज़ब!! कांग्रेस और भाजपा के बीच, राजनैतिक परिदृश्य बड़ा कठिन हो गया है।

भाजपा नेतृत्व वसुंधरा को पसंद नहीं करता। कांग्रेस नेतृत्व अशोक गहलोत को पसंद नहीं करता।

लेकिन दोनों ही पार्टियों का नेतृत्व अपने नापसंद व्यक्तियों के खिलाफ कदम उठाने में असमर्थ हैं।

वसुंधरा और गहलोत बहुत अच्छे मित्र हैं तथा इस उक्ति को चरितार्थ कर

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

# शरद पवार ने विपक्ष की एकता को एक और झटका दिया

## पवार ने कर्नाटक में 40-45 सीटों पर अपनी पार्टी का उम्मीदवार खड़ा करने की घोषणा की

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नईदिल्ली, 15 अप्रैल। 10 मई को होने वाले कर्नाटक विधानसभा चुनावों को अन्य विभिन्न विधानसभाओं तथा 2024 के आम चुनावों के ''फुल ड्रैस रिहर्सल'' की शुरुआत के रूप में देखा जा रहा है। लेकिन गौरतलब बात यह है कि कर्नाटक चुनावों में कई मोड़ और घुमाव भी आने लगे हैं जो राष्ट्रीय राजनीति की प्रकृति की रूपरेखा के मुश्किल होने की भविष्यवाणी कर रहे हैं। विपक्षी दलों के दबाव के आगे झुकने के एक दिन बाद ही, एन.सी.पी. नेता शरद पवार पीछे हटते तथा ''विपक्षी एकता'' के हित में अडानी-मुद्दे पर ''यू-टर्न'' लेते नज़र आ रहे हैं। उनकी पार्टी की तरफ से आगे इस विस्फोटक बयान का लक्ष्य फिलहाल कर्नाटक कांग्रेस है। यह सुनिश्चित ही है, पवार की पार्टी 10 मई को हो रहे कर्नाटक विधानसभा चुनावों में 40-45 सीटों पर चुनाव लड़ेगी। एन.सी.पी. के इस कदम को उस पार्टी के लिये पिच को खराब करना ही कहा जायेगा, जो इस समय, स्वयं को राज्य में सबसे आगे तथा राज्य की सत्ता को सत्तारूढ़ भाजपा से छीन लेने में समर्थ मान रही है।

क्या आपको कम सुनाई देता है।
कान की मशीनें
स्पीच थैरेपी
फ्री सुनाई की जाँच
TRIAL OF HEARING AID
CALL FOR APPOINTMENT
+91 94602 07080
PERFECT SPEECH AND HEARING SOLUTIONS
Tonk Road, JAIPUR | Vaishali Nagar, JAIPUR
www.perfecthearingsolutions.com

- **पवार के ये उम्मीदवार, कांग्रेस, जो कि कर्नाटक में भाजपा को विधानसभा चुनाव में हराने के नजदीक बतायी जाती है, के प्रत्याशियों के ही वोट काटेंगे तथा परोक्ष रूप से भाजपा को मदद ही करेंगे।**
- **पवार, कर्नाटक-महाराष्ट्र सीमान्तर क्षेत्रों में, जहां मराठी जनसंख्या काफी है, में भी महाराष्ट्र एकीकरण समिति को प्रोत्साहित कर रही है, अपने उम्मीदवार खड़े करने के लिये।**
- **पवार अडानी प्रकरण में जे.पी.सी. के गठन का विरोध करके, एक झटका पहले ही दे चुके हैं कांग्रेस को।**
- **पवार खेमे का इस बारे में कहना है कि, हाल ही में चुनाव आयोग के नियमों के अनुसार उनका राष्ट्रीय पार्टी होने का ''स्टेटस'' खत्म हो गया है, वे अपना पुराना ''स्टेटस'' पाने के लिये कर्नाटक में अपने उम्मीदवार खड़े कर रहे हैं।**

एन.सी.पी. के प्रवेश से कर्नाटक चुनाव और भी ज्यादा दिलचस्प हो जायेंगे तथा इस समय का भाजपा, कांग्रेस और जनता दल (एस) के बीच का इस त्रिकोणीय संघर्ष में एक कोण

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

# अतीक अहमद और उसके भाई की गोली मारकर हत्या

प्रयागराज, 15 अप्रैल। अतीक अहमद और भाई अशरफ की आज गोली मारकर हत्या कर दी गई। प्रयागराज में मैडिकल के लिए ले जाते समय उन्हें गोली मारी गई, जिससे उनकी मौत हो गई। सूत्रों के अनुसार, अतीक और

- **पत्रकार बन कर आए तीन लोगों ने उस समय अतीक और उसके भाई को गोली मार दी, जब प्रयागराज में उसे मैडिकल के लिए ले जाया जा रहा था, सारी घटना कैमरा पर रिकॉर्ड हुई है।**

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

# '2019 के चुनाव के ठीक पहले पुलवामा क्यों हुआ?'

## विपक्ष ने कश्मीर के पूर्व राज्यपाल के इन्टरव्यू को आधार बनाकर मोदी सरकार पर, लापरवाही, बदइंतजामी जैसे कई आरोप लगाये

-श्रीनन्द झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 15 अप्रैल। जम्मू-कश्मीर के पूर्व राज्यपाल सत्यपाल मलिक के कल के बयान के बाद, नरेन्द्र मोदी सरकार चौतरफा हमलों से घिर गई है। मलिक ने कल कहा था कि 2019 में पुलवामा की घटना के समय, सी.आर.पी.एफ. को एयरक्राफ्ट का उपयोग करने के लिये मना कर दिया गया था तथा उसे सड़क मार्ग से जाने के निर्देश दिये गये थे।

''द वायर'' के करण थापर को दिये गये एक विस्फोटक इन्टरव्यू में, मलिक ने प्रधानमंत्री पर सुरक्षा मामलों में ''लापरवाह'' होने का आरोप लगाया था। उन्होंने आरोप लगाया था कि पुलवामा की घटना केन्द्र सरकार की ''अक्षमता'' तथा गुप्तचर एजेंसियों की ''बड़ी गलती'' के कारण हुई थी। मलिक के आरोपों को दोहराते हुये, कांग्रेस पार्टी ने प्रधानमंत्री पर आरोप लगाया कि उन्होंने ''अपनी व्यक्तिगत छवि को बचाने'' की कोशिश में, पुलवामा से संबंधित प्रश्नों को ''दफन कर देने'' की कोशिशें की थीं। मोदी को संबोधित करते हुये, कांग्रेस ने अपने अधिकृत ट्विटर हैंडल पर कहा कि अगर केन्द्र सरकार ने जवानों को ले जाने के लिये एयरक्राफ्ट उपलब्ध करा दिया होता तो आतंकियों की साजिश नाकाम की जा सकती थी। पूर्व केन्द्रीय मंत्री मनीष तिवारी ने कहा कि पूर्व राज्यपाल के बयान बहुत व्याकुल कर देने वाले थे तथा यह घटना भारत को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बहुत खराब स्थिति में प्रस्तुत करेगी।

- **पर, सबसे गंभीर आरोप आर.जे.डी. के नेता मनोज झा ने लगाया। उनका आरोप था कि, भाजपा ने 2019 के चुनाव की दृष्टि से हादसा होने दिया और दुखान्तिका के सही कारणों को तो दबा दिया गया, जिससे दुखान्तिका की जिम्मेवारी पाकिस्तान पर थोपी जा सके और भाजपा सरकार की छवि उज्जवल बनी रहे और उस पर कोई कालिख न लगे।**

मलिक ने संबंधित बयान के इस अंश को लेते हुये कहा कि ''प्रधानमंत्री को भ्रष्टाचार के मुद्दों की कोई ज्यादा परवाह नहीं थीं,'' दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल ने कहा कि मलिक का बयान इस बात का सबूत है कि ''भ्रष्टाचार (का मुद्दा) भाजपा के लिये

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

# बेटियों का यौन शोषण करने वाले पिता को 20 साल की सजा

जयपुर, 15 अप्रैल (का.सं.)। पॉक्सो मामलों की विशेष अदालत क्रम-1 महानगर प्रथम ने एक नाबालिग बेटी से दुष्कर्म और दूसरी नाबालिग पुत्री से छेड़छाड़ करने वाले अभियुक्त पिता को बीस साल की सजा सुनाई है। इसके साथ ही अभियुक्त पर चालीस हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया गया है।

- **पॉक्सो मामलों की विशेष अदालत ने पीड़ित नाबालिग बच्चियों की मां की रिपोर्ट पर कार्यवाही की तथा 40,000 रू. का जुर्माना भी लगाया।**

अभियोजन पक्ष की ओर से अदालत को बताया गया कि पीड़िताओं की मां ने 23 अप्रैल, 2020 को

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

# अस्सी वर्षीय कांग्रेसाध्यक्ष खड़गे के समक्ष भारी दुविधा?

## राजस्थान में पार्टी के सामने आये संकट का असली कारण वे समझ तो रहे हैं, पर समाधान को क्रियान्वित करने से पार्टी को होने वाले नुकसान से भी परिचित हैं

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 15 अप्रैल। राजस्थान की कमान कौन संभाले? देश की सबसे पुरानी पार्टी, कांग्रेस के प्रमुख मल्लिकार्जुन खड़गे को इस प्रश्न ने एक गंभीर दुविधा में डाल दिया है क्योंकि वह कोई ऐसा तरीका ढूढ़ने को लेकर मशक्कत कर रहे हैं, जो ना केवल कांग्रेस को जीत दिलाए बल्कि पार्टी की दोनों असैट्स भी पार्टी के साथ ही रहे।

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत तथा पूर्व उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट के मुद्दे को जहाँ दोनों प्रमुख राजनीतिक खिलाड़ियों के बीच की एक गंदी लड़ाई के रूप में चित्रित कर यह बताया जा रहा है कि इससे पार्टी का अंदरूनी तनाव सार्वजनिक हो रहा है, लेकिन वास्तविक समस्या पीढ़ीगत है और इससे राजनीतिक हल, व्यापार तथा उद्योग सभी प्रभावित हो रहे हैं।

- **राजनीतिक संकट की जड़ में है, नयी पीढ़ी को उभरने न देने की प्रवृत्ति। नयी पीढ़ी (सचिन पायलट व उनके युवा समर्थक) सत्ता व संगठन में अपनी उचित हिस्सेदारी की मांग कर रहे हैं।**
- **सचिन पायलट व उनकी युवा टीम की मेहनत ने, 2013 में, धरातल में पहुंची पार्टी, जो विधानसभा चुनाव में कुल 21 सीट पर विजयी हुई थी, को 2018 में 99 सीटों पर जितवाया था तथा कांग्रेस सरकार बना पायी थी। टीम को आशा थी कि, उनके नेता को सरकार का नेतृत्व करने का मौका मिलेगा।**
- **कांग्रेसाध्यक्ष राहुल गांधी का ऐसा वादा भी था। पर, पुरानी पीढ़ी (गहलोत) युवा को सत्ता सौंपने को कतई तैयार नहीं हुई।**
- **खड़गे जानते हैं कि, 6 महीने बाद होने वाले चुनाव में युवा वर्ग को पूर्ण रूप से, मन से सक्रिय नहीं किया गया, तो, चुनावी जीत की संभावना क्षीण है।**
- **पर, अभी युवा वर्ग काफी रोष में है, क्योंकि उसको उचित हिस्सेदारी साढ़े चार साल में नहीं मिली है।**
- **युवाओं में रोष व पुरानी पीढ़ी (गहलोत) की हठधर्मी के बीच, कांग्रेस की नैया को कैसे खेवें, इसका समाधान निकालना टेढ़ी खीर साबित हो रहा है, खड़गे के लिये।**

पायलट द्वारा इस हफ्ते की शुरुआत में एक दिन के उपवास पर बैठे जाने को एक पार्टी विरोधी गतिविधि करार किया गया और यह वादा किया गया कि जल्द ही एक बड़ी राजनीतिक सर्जरी होने वाली है, लेकिन खड़गे की बुद्धिमता, परिपक्वता और अनुभव ने इस संकट को तुरंत समाप्त कर एक उम्मीद जगाई कि एक ऐसा समाधर ढूंढ़ा जाएगा जो रेगिस्तानी राज्य राजस्थान के दोनों प्रतिद्वंदियों को स्वीकार्य होगा। कई संघर्षों का अनुभव रखने वाले एक सीनियर की भांति खड़गे ने इस संकट का कोई समाधान निकालने के लिए पार्टी के संगठन महासचिव के.सी. वेणुगोपाल और मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ को नियुक्त किया है।

खड़गे कांग्रेस अध्यक्ष तो अब बने हैं, लेकिन पार्टी आलाकमान ने नसे गत वर्ष 27 अक्टूबर को कहा था कि राजनीतिक हलचलों में फंसे एक जहाज को सुरक्षित रूप से आगे ले जाना है। उन्हें अब कई मोर्चों पर लड़ना होगा।

खड़गे असीमित व्यक्तिगत अहंकारों और महत्वाकांक्षाओं के साथ ही आदर्शों के बीच संतुलन स्थापित करने की कोशिश कर रहे हैं।

राजस्थान में कांग्रेस की वास्तविक समस्या यह है कि 70 की उम्र पार कर

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

# विधायकों की वन-टू-वन मीटिंग

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 15 अप्रैल। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविन्द सिंह डोटासरा ने राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और पूर्व उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट के बीच सुलह कराने के एक प्रयास के रूप में पार्टी के चुनिंदा विधायकों की जयपुर में 17 और 18 अप्रेल को एक मीटिंग आयोजित की है।

- **मीटिंग में गहलोत व पायलट भी शामिल होंगे, मीटिंग में पार्टी की अन्तर्कलह पर विधायकों से फीडबैक लिया जाएगा।**

गहलोत और पायलट, दोनों से इस मीटिंग में भाग लेने का अनुरोध किया गया है। पार्टी की अंदरूनी कलह पर विधायकों की राय और उनके सुझाव जानने को लेकर राजस्थान के ए.आई.

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )